उत्तर प्रदेश सरकार

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

LLF
Language and Learning foundation
Strong Foundation, Stronger Future

सहज-3

कक्षा-3

नि:शुल्क वितरण हेतु
सत्र 2020-2021

मुझे पढ़ना पसन्द है।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

सहज-3

कक्षा-3

संरक्षण : **श्रीमती रेणुका कुमार, आई.ए.एस**
अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा)
उ.प्र. शासन, लखनऊ

निर्देशन **श्री विजय किरन आनन्द, आई.ए.एस**
महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र

संकल्पना एवं मार्गदर्शन : **श्री सत्येन्द्र कुमार, आई.ए.एस.**
अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.
डा0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ

समन्वयन : **श्री आनन्द कुमार पाण्डेय,** वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी, गुणवत्ता, समग्र शिक्षा
श्रीमती शिखा शुक्ला, विशेषज्ञ, गुणवत्ता, समग्र शिक्षा
श्री पी. एम. अन्सारी, राज्य सलाहकार, गुणवत्ता शिक्षा, समग्र शिक्षा

परामर्श : **श्री अजय कुमार सिंह,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ
श्रीमती दीपा तिवारी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ

समीक्षा एवं संपादन : **श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता शिक्षा, समग्र शिक्षा
श्री रमेश चंद्र, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली

लेखन मंडल : डॉ दिलीप कुमार तिवारी (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुगराजपुर, कौशाम्बी, एवं SRG कौशाम्बी जनपद), कृष्ण मुरारी उपाध्याय (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पठा, महरौनी, ललितपुर) योगेन्द्र सिंह (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय सलारपुर, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर), रागिनी गुप्ता (प्रधानाध्यापिका, अभिनव प्रा0वि0 ककोरगहना, जौनपुर), सुशील कुमार उपाध्याय (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चांदपुर, सिकरारा, जौनपुर एवं ARP जनपद जौनपुर) वन्दना गुप्ता (सहायक अध्यापिका, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर, चिनहट, लखनऊ) श्रीप्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मड़ियाहूँ प्रथम, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर) जय शेखर (सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर), जय प्रकाश सिंह (सहायक अध्यापक, पू.मा.वि खरगापुर, डीघ, भदोही) गजेन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरेशम्भू, औराई, भदोही एवं ARP), सुप्रिया घोष (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) सहदेव पंवार (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली)

ले–आउट एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : प्रेमचन्द सैनी (ग्राफिक डिजाईनर), जयपुर, राजस्थान

चित्रांकन : सुशांता दास, हीरा धुर्वे, पूजा साहू, सुबिनिता देशप्रभु, निलेश गहलोत, हबीब अली

अन्तः पृष्ठ के कागज का विशिष्टीकरणः प्रयुक्त कागज मिल **के.आर पल्प एण्ड पेपर्स लि०/सेन्चुरी पल्प एण्ड पेपर** वर्जिन पल्प युक्त कागज बैम्बू अथवा वुड बेस्ड (Bamboo or wood based) के अतिरिक्त अन्य एग्रो बेस्ड (Agro based) अर्थात बगाज पर आधारित एवं क्रीम लेड एण्ड क्रीमवोब पेपर 70 जी.एस.एम. भार तथा आकार 50.8 सेमी.x 76.2 सेमी. का है। कागज की ब्राइटनेस न्यूनतम 80 प्रतिशत, वन मिनट कॉब टेस्ट की अधिकतम औसत 22, ब्रेकिंग लेन्थ क्रॉस डायरेक्शन 1700, मशीन डायरेक्शन 2500, ओपेसिटी न्यूनतम–85 प्रतिशत एवं रजिस्टेन्ट टू फेदरिंग–टू पास द टेस्ट, टियर इन्डेक्स सी0डी0 4.0 एवं एम0 डी0 3.5 है। प्रयुक्त होने वाला कागज में अन्य विशिष्टियाँ बी0 आई0 एस0 कोड–1848 (चौथा पुनरीक्षण) के अनुसार हैं।

पुस्तकों में प्रिण्ट साइजः 15.9 सेमी. X 22.1 सेमी, ट्रिम साइजः 18.41 सेमी X 24.13 सेमी. है।

प्रकाशक : **अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा**
मुद्रक : **नवज्योति प्रेस, पंचवटी, मथुरा**
मुद्रित प्रतियों की संख्या : **2,31,477**

उत्पादन : पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उ0प्र0।
© उत्तर प्रदेश शासन।

आभारः इस पुस्तक के निर्माण में कई स्रोतों से सामग्रियों का उपयोग किया गया है, इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

विषय सूची

पाठ–1	तोता (कविता)	1
पाठ–2	सर्र सर्र सर्र (कहानी)	2
पाठ–3	वाह रे चोर (कहानी)	4
पाठ–4	भालू की बस (कहानी)	6
पाठ–5	सियार और ऊँट (कहानी)	8
पाठ–6	गाजर और गाय (कहानी)	10
पाठ–7	गौरेया फुर्र (कहानी)	12
पाठ–8	राजू और काजू (कविता)	14
पाठ–9	पौधों से लगाव (कहानी)	16
पाठ–10	दोस्त का पत्र (पत्र)	18
पाठ–11	आम दिवस (कहानी)	20
पाठ–12	गुफा (कहानी)	22
पाठ–13	नाव की सवारी (यात्रा वृतांत)	24
पाठ–14	मेरा गाँव (विवरण)	26
पाठ–15	लोभ (कहानी)	28
पाठ–16	बोलती चुटकी (कहानी)	30
पाठ–17	लायक कौन? (एकांकी)	32
पाठ–18	शेर और खरगोश (कहानी)	34
बताओ, मैं कौन? (पहेलियाँ)		36

तोता

पापा एक तोता लाए,
सुबह-शाम वह शोर मचाए।
खुशबू-बदबू वह पहचाने,
ठंडा-गरम सब वह जाने।
अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे,
भागे सबके पीछे-पीछे।
गीले से घबराता है,
सूखे मे सो जाता है।
नाम लेकर मुझे बुलाए,
जो मैं बोलूँ, वही दोहराए।
घर का रखता, वह ख़्याल,
रोज पूछता सबका हाल।

पाठ–2

सर्र सर्र सर्र

एक दिन गीता और सीता सो रही थीं, तभी कमरे की बिजली कट गई। उन्हें अचानक सर्र सर्र सर्र की आवाज आने लगी। दोनों आवाज सुनकर डर गईं। आवाज कभी एक कोने से आती, तो कभी दूसरे कोने

से। अँधेरे में उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। दोनों बहुत ज्यादा डरने लगीं। तभी बिजली आ गई। उन्होंने देखा कि पॉलीथिन में एक भँवरा फँसा है। वह पॉलीथिन को लेकर उड़ रहा है। पॉलीथिन से ही सर्र सर्र सर्र की आवाज आ रही थी। यह देखकर दोनों जोर-जोर से हँसने लगीं।

पाठ-3

वाह रे चोर

गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। एक दिन उसको खीर बनाते-बनाते नींद आ गई। उसके घर के पास से चार चोर जा रहे थे। उन्हें खीर की खुशबू आई। खीर की खुशबू से चोरों के मुँह में पानी आ गया। उन्होंने खीर खाने की सोची और बुढ़िया के घर में घुस गए।

उन्होंने देखा, रसोई में खीर रखी हुई है और बुढ़िया मुँह खोल कर सो रही है। उन्होंने सोचा- ''बेचारी बुढ़िया भूखी है। पहले बुढ़िया को खीर खिलाते हैं, फिर हम खाएँगे।'' चोरों ने बुढ़िया के मुँह में गरम-गरम खीर डाल दी। गरम खीर से बुढ़िया का मुँह जल गया और वह चिल्लाई। चोर छिप गए। बुढ़िया के चिल्लाने से आस-पास के लोग बुढ़िया के घर आ गए। उन्होंने चोरों को पकड़ लिया।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

पाठ-4

भालू की बस

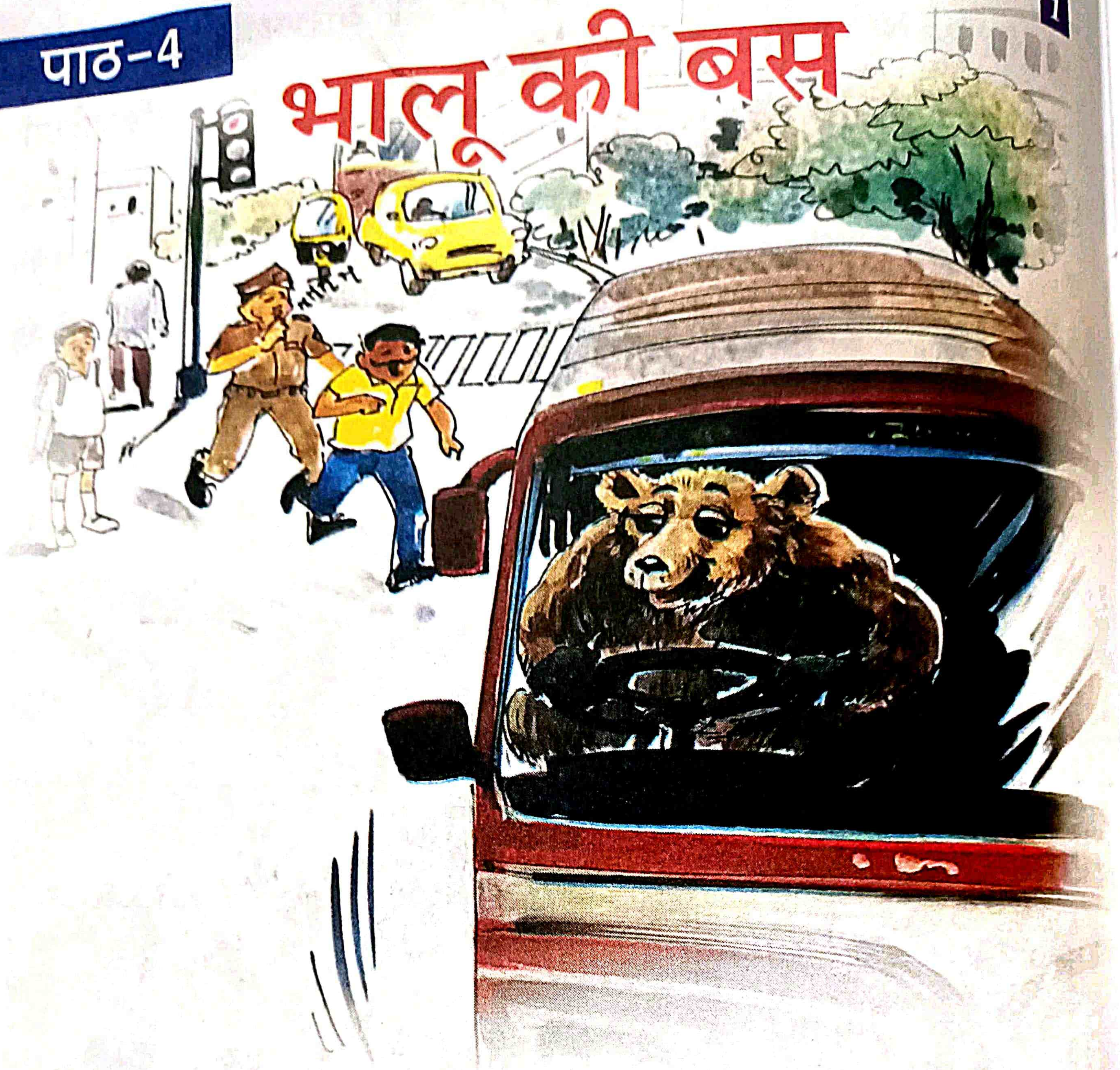

भालू शहर में घूमने निकला। उसने सड़क पर बस देखी। उसका मन बस चलाने का हुआ। उसे रास्ते में एक बस खड़ी मिली। भालू बस में बैठा और उसे चलाने लगा। बस वाला चिल्लाया- ''मेरी बस।'' बस वाला उसके पीछे भागा। सड़क पर लाल बत्ती हो गई थी। लेकिन भालू बस चलाता ही रहा।

पुलिस वाले ने भी बस को रोकना चाहा पर भालू ने बस नहीं रोकी। अब भालू की बस आगे-आगे, सब उसके पीछे-पीछे। भालू को मजा आ रहा था। भालू ने बस की रफ्तार बढ़ा दी। बस वाला और तेज भागा। भालू को और मजा आया। बस का डीजल खत्म हो गया और बस रुक गई। बस वाले और पुलिस वाले ने भालू को देखा और वे डर कर भागने लगे। अब सब आगे-आगे और भालू उनके पीछे-पीछे।

पाठ–5

सियार और ऊँट

सियार और ऊँट की पक्की दोस्ती थी। दोनों साथ-साथ घूमने जाते थे। एक दिन दोनों फल खाने के लिए चुपचाप एक बाग में घुस गए। उस बाग में बहुत सारे फलों के पेड़ थे। उन दोनों ने अमरूद खाने की सोची। ऊँट ने बहुत सारे अमरूद तोड़े। दोनों ने अमरूद खाने शुरू कर दिए। सियार बहुत तेजी से अमरूद खाने लगा। सियार का पेट जल्द ही भर गया। पर ऊँट खाता रहा।

तभी सियार बोला- ''मेरा हूंक करने का समय हो गया है।'' ऊँट बोला- ''अभी थोड़ी देर रुक जाओ, मेरा पेट नहीं भरा है।'' पर सियार नहीं माना और जोर-जोर से हूंक भरने लगा। हूंक सुनकर बगीचे के रखवाले आ गए। सियार तो भाग गया, पर ऊँट की खूब पिटाई हुई। ऊँट ने मन में ठान लिया कि वह सियार से बदला जरूर लेगा।

कुछ दिनों बाद वे दोनों नदी के किनारे पर मिले। ऊँट बोला- ''चलो नदी के उस पार चलते हैं। वहाँ बहुत सारे फलों के पेड़ हैं। वहाँ जाकर फल खाएँगे।'' सियार ऊँट की पीठ पर बैठा। दोनों ने नदी पार करना शुरू किया। बीच नदी में जाकर ऊँट बोला- ''मेरा डुबकी लगाने का मन कर रहा है।'' सियार बोला- ''अरे! यह क्या कर रहे हो? मैं तो डूब जाऊँगा!'' पर ऊँट ने नहीं सुना और नदी में डुबकी लगा दी। नदी का पानी बहुत ठंडा था और बहुत तेज बह रहा था। सियार नदी में पानी के बहाव के साथ बह गया। बड़ी मुश्किल से नदी के किनारे पहुँचा।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

पाठ-6

गाजर और गाय

जाड़े का समय था। चारों ओर कोहरा छाया हुआ था। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं बाबा के साथ अपने गाजर के खेत में गाजर निकालने जा रहा था। मैं और बाबा खेत पहुँचे और हम जल्दी-जल्दी गाजर निकालने लगे। बाबा को शहर जाकर उन्हें बेचना था। हम गाजर निकालते और ढेर बनाते जाते। तभी आशीष की गाय घूमते-घूमते वहाँ आ पहुँची। आशीष हमारा पड़ोसी है। आशीष की गाय मजे से गाजर खाने लगी। गाय पर तब तक किसी की नजर नहीं पड़ी थी।

अचानक बाबा पीछे मुड़े और गाय को देखते ही उसे भगाने लगे। गाय नहीं रुकी और गाजर मज़े से खाती रही। तब बाबा उसे भगाने के लिए उठकर भागे। जैसे ही बाबा उठे, खेत की मेढ़ से टकरा कर गाजर के ढेर पर जा गिरे। इतने में गाय भाग गई।

बाबा के पैर में चोट लग गई। काम ख़त्म करके बाबा लंगड़ाते हुए चलने लगे। रास्ते में रुककर बाबा आशीष के घर गए और चिल्लाकर आशीष से बोले- "अपनी गाय को सँभालकर, खूँटे से बाँधकर रखा करो।"

आशीष बोला- "मेरी गाय को आपके खेत की गाजर बहुत पसंद है। इसलिए वह रोज आपके खेत चली जाती है।" यह सुनकर पहले बाबा मुस्कुराए और फिर बोले- "अगर ऐसी बात है तो मैं उसे खुद दो गाजर रोज दे दिया करूँगा। मगर गाय को खुला मत छोड़ा करो।" यह कहते हुए बाबा और मैं घर की ओर चल दिए।

पाठ-7

गौरैया फुर्र

जंगल में एक पेड़ के नीचे, एक सियार रहता था। उसी पेड़ पर गौरैया घोंसला बनाकर रहती थी। घोंसले में उसके छोटे-छोटे बच्चे भी थे। सियार रोज सुबह घूमने निकल जाता था और शाम को लौट कर आता था। शाम को आकर वह गौरैया से पूछता- ''मैं कैसा दिखता हूँ?'' वह जवाब देती कि- ''राजा जैसा, बाबू जैसा और कैसा!''

गौरैया इसी तरह रोज उसकी झूठी तारीफ करती थी ताकि सियार उसके बच्चों को नुकसान न पहुँचा दे। सियार सच में अपने आप को एक राजा जैसा मानने लगा था और जंगल में बड़ी शान से घूमता था। समय बीतता गया और गौरैया के बच्चे उड़ने लायक हो गए।

एक दिन सियार ने उसी अंदाज में उससे पूछा- ''मैं कैसा दिखता हूँ?'' गौरैया ने तपाक से जवाब दिया- ''आकुड़ जैसा, बाकुड़ जैसा। सियार का मुख होता है ऐसा।'' इतना सुनते ही सियार गुस्से में आ गया। सियार को बिलकुल भी भरोसा नहीं हुआ कि गौरैया ऐसा बोलेगी। सियार गुस्से में आकर उसको मारने पेड़ पर चढ़ गया। सियार को ऊपर आते देख, गौरैया और उसके बच्चे फुर्र से उड़ गए। सियार पेड़ से लुढ़ककर गिरा और जोर-जोर से कराहने लगा। अब उसे गौरैया का सारा खेल समझ आ चुका था। उस दिन से उसने ठान लिया कि वह अब किसी पर भी यकीन नहीं करेगा।

पाठ-8

राजू और काजू

एक था राजू,
एक था काजू।
दोनों पक्के यार।

इक दूजे के थामे बाजू,
जा पहुँचे बाजार।

भीड़ लगी थी धक्कम-धक्का,
देख कर रह गए हक्का-बक्का।
इधर-उधर वे लगे ताकने,
यहाँ झाँकने, वहाँ झाँकने।

इधर दुकानें, उधर दुकानें,
अंदर और बाहर दुकानें।
पटरी पर छोटी दुकानें,
बिल्डिंग में मोटी दुकानें।

सभी जगह पर भरे पड़े थे,
दीए और पटाखे,
फुलझड़ियाँ, सुर्री, हवाइयाँ,
गोले और चटाखे।

राजू ने लीं कुछ फुलझड़ियाँ,
कुछ दीए, कुछ बाती,
बोला, 'मुझको रंग-बिरंगी,
बत्ती ही है भाती।

काजू बोला- 'हम तो भैया,
लेंगे बम और गोले।
इतना शोर मचाएँगे कि
तोबा हर कोई बोले।

दोनों घर को लौटे और
दोनों ने खेल चलाए।
एक ने बम के गोले छोड़े,
एक ने दीप जलाए।

काजू के बम-गोले फटकर,
मिनट में हो गए ख़ाक।
पर राजू के दीया-बाती,
जले देर तक रात।

– सफ़दर हाशमी

पौधों से लगाव

अमित प्रतिदिन विद्यालय जाता। विद्यालय के बाहर बहुत से खाने-पीने वालों के ठेले खड़े होते। अमित रोज कुछ न कुछ खरीद कर खाता।

एक दिन जब वह स्कूल से बाहर आया, उसने एक नया ठेला खड़ा देखा। ठेले पर भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के पौधे थे। ठेले वाला पौधों के बारे में बता रहा था। अमित को फूलों के पौधे बहुत पसंद थे। उसने लाल फूल का पौधा लेने का मन बनाया। पौधे में कुछ कलियाँ लगी थीं। अमित चाहता था कि फूल उसके घर जाकर खिलें।

उसने पौधे वाले से दाम पूछा। ठेले वाले ने पौधा तीस रुपये का बताया। अमित के पास तीस रुपये नहीं थे। उसने छह-सात दिन खाने-पीने की चीजें नहीं खरीदीं। प्रतिदिन पैसे बचाकर उसने तीस रुपये जोड़ लिए। उसने तीस रुपये देकर पौधा खरीदा और घर ले आया। अमित ने पौधे की अच्छी तरह देखभाल की। पाँच दिन बाद पौधे में दो फूल खिले। अमित की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अमित के परिवार के लोग भी बहुत प्रसन्न हुए।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

पाठ-10

दोस्त का पत्र

मेरे प्रिय मित्र,

तुम्हें मेरा प्रणाम।

मेरे प्यारे मित्र! जबसे तुम्हें मैंने मुंबई, अपने भाई के घर गलती से छोड़ दिया, तब से तुम्हारी हर दिन कमी महसूस होती है। जब भी मैं स्कूल जाता हूँ, टीवी देखता हूँ या काम करता हूँ तो मुझे तुम बहुत याद आते हो। मुझे अपनी गलती पर बहुत दुःख होता है कि तुम मुंबई में मेरे भाई के यहाँ छूट गए हो। तुम्हारी कमी को पूरा करने के लिए मैं दूसरा चश्मा लगा रहा हूँ। बाकी काम भी मैं उसे ही लगा कर करता हूँ। लेकिन जो आराम और सुकून मुझे तुम्हें लगाकर मिलता था, वह किसी और से नहीं मिल पा रहा है। अब मेरी आँखों में भी दर्द होने लगा है। तुम मुझे कब तक मिल जाओगे, बस यही इंतजार कर रहा हूँ। भाई ने कहा है दिवाली तक वह तुम्हें मेरे पास पहुँचा देंगे। अब मैं दिवाली का इंतजार कर रहा हूँ ताकि तुम जल्द ही मेरे पास आ सको। तुम्हारे इंतजार में तुम्हारा मित्र, तुम्हारी राह देख रहा है।

तुम्हारा प्रिय मित्र

सोनू

पाठ-11

आम दिवस

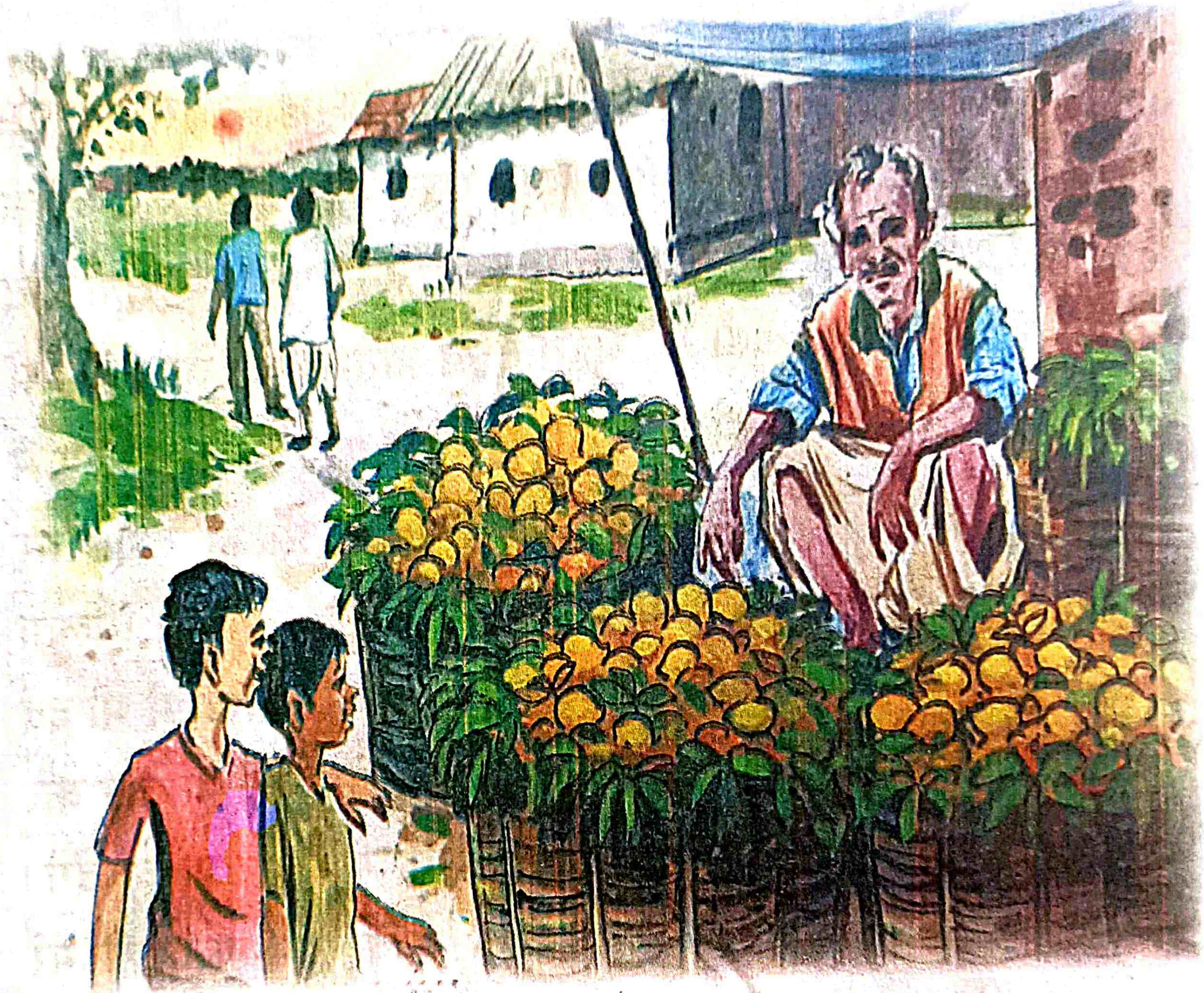

गाँव में एक गुप्त बैठक चल रही थी। विषय था, नंदलाल को सबक सिखाना। नंदलाल एक बेहद बेईमान दुकानदार था। वह सामानों के दाम बढ़ा-चढ़ाकर लेता था। पूरा गाँव नंदलाल की इस बात से परेशान था। मगर गाँव में एक ही दुकान थी। बैठक में एक योजना बनी। योजना के मुताबिक, गाँव में आम दिवस मनाने का फैसला

हुआ। इस दिन सभी लोग सुबह–शाम सिर्फ आम खाएँगे। यह बात गाँव में चारों ओर फैल गई। नंदलाल को भी पता चला। गाँव में भी आम के बहुत पेड़ थे मगर अभी उनके आम पके नहीं थे। दुकानदार नदंलाल को फिर पैसा कमाने का लालच आ गया। उसने सोचा– "सभी पके आम खाएँगे, मगर गाँव में तो आम पके ही नहीं हैं। मैं बाजार से खूब पके आम खरीदकर लाऊँगा और ऊँचे दाम में बेचूँगा। गाँव वाले जाएंगे कहाँ? सभी मुझसे ही खरीदकर खाएँगे।"

नंदलाल आम दिवस से एक दिन पहले बाजार से पके आम खरीद लाया। आम दिवस के दिन वह सुबह–सुबह आम लेकर बेचने बैठ गया। आम देखने कई लोग जमा हो गए। भीड़ देखकर नंदलाल काफी खुश हुआ। उसने कहा– "बहुत दूर से लाया हूँ। इसलिए ऊँचे दाम में बेचूँगा।" लेकिन योजना के मुताबिक, कोई भी आम खरीदने नहीं आया। गाँव के मुखिया ने कहा– "हम आम दिवस अगले सप्ताह मनाएँगे। तब तक हमारे आम पक जाएँगे।" जब नंदलाल को पता चला तो उसने अपना माथा पकड़ लिया। उसने आम के दाम कम कर दिए, फिर भी कोई, आम खरीदने नहीं आया। उसके आम सड़ने लगे। अब उसे ये बात समझ में आ चुकी थी कि गाँव वाले उसे सबक सिखा रहे थे। योजना के मुताबिक, उसका एक भी आम नहीं बिका। उसे इस बार जबरदस्त घाटा हुआ। गाँव वालों ने आखिरकार उसे सबक सिखा ही दिया।

पाठ–12

गुफा

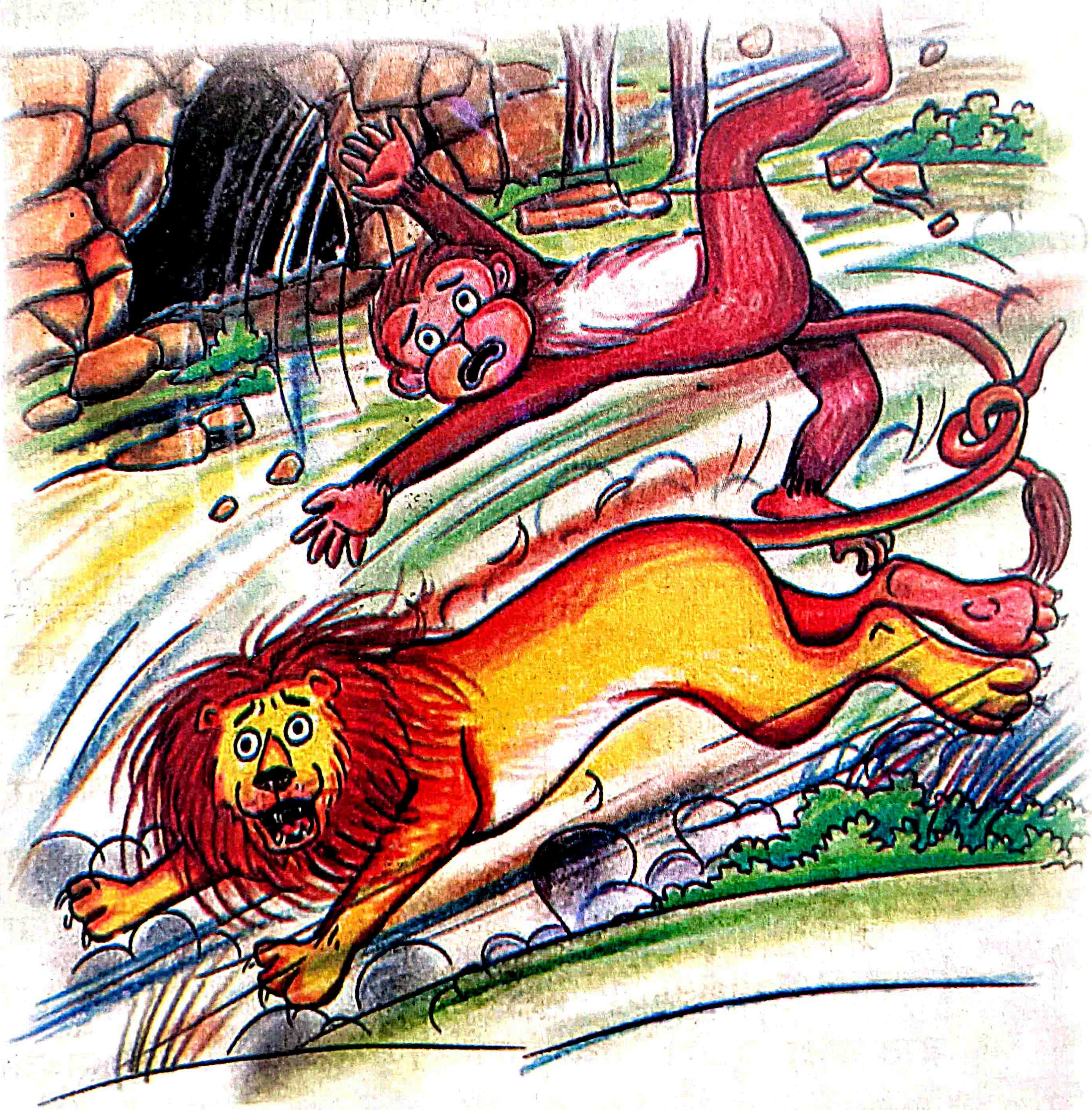

एक दिन सियार और सियारिन को एक शेर की खाली गुफा दिखी। वे दोनों खाली गुफा देखकर अपने बच्चों के साथ उसमें रहने लगे। एक दिन शेर अपनी गुफा में वापस आ गया। सियार और सियारिन ने शेर को आता देखकर एक उपाय सोचा। वे दोनों एक-दूसरे के आगे-पीछे ऐसे खड़े हो गए जैसे कोई बड़ा जानवर हो। उनकी परछाई बड़े जानवर की तरह लगने लगी। यह देखकर शेर डर गया।

बंदर यह सब देख रहा था। बंदर ने शेर से कहा- ''अरे कोई बड़ा जानवर नहीं है। इसमें तो सियार और सियारिन हैं।'' शेर ने कहा- ''नहीं-नहीं, वह तो कोई बड़ा जानवर है।'' बंदर ने कहा- ''चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।'' शेर बोला- ''मैं तो नहीं जाऊँगा।'' बंदर बोला-''ऐसा करो मेरी पूँछ से अपनी पूँछ बाँध लो।''

अब शेर और बंदर को आते देख सियार, सियारिन से ऊँची आवाज में बोला- ''क्या बात है रानी, ये बच्चे क्यों रो रहे हैं? सियारिन बोली- ''ये बच्चे शेर का ताजा माँस खाना चाहते हैं?'' सियार अपने बच्चों से बोला- ''बच्चों रो नहीं! बंदर शेर को लेकर आता ही होगा।'' इतना सुनकर शेर बहुत तेज भागा, उससे बँधा बंदर भी उसके साथ घिसटता हुआ चला गया। उसके बाद वह शेर वहाँ कभी वापस नहीं आया और वह गुफा सियार और सियारिन की हो गई।

पाठ-13

नाव की सवारी

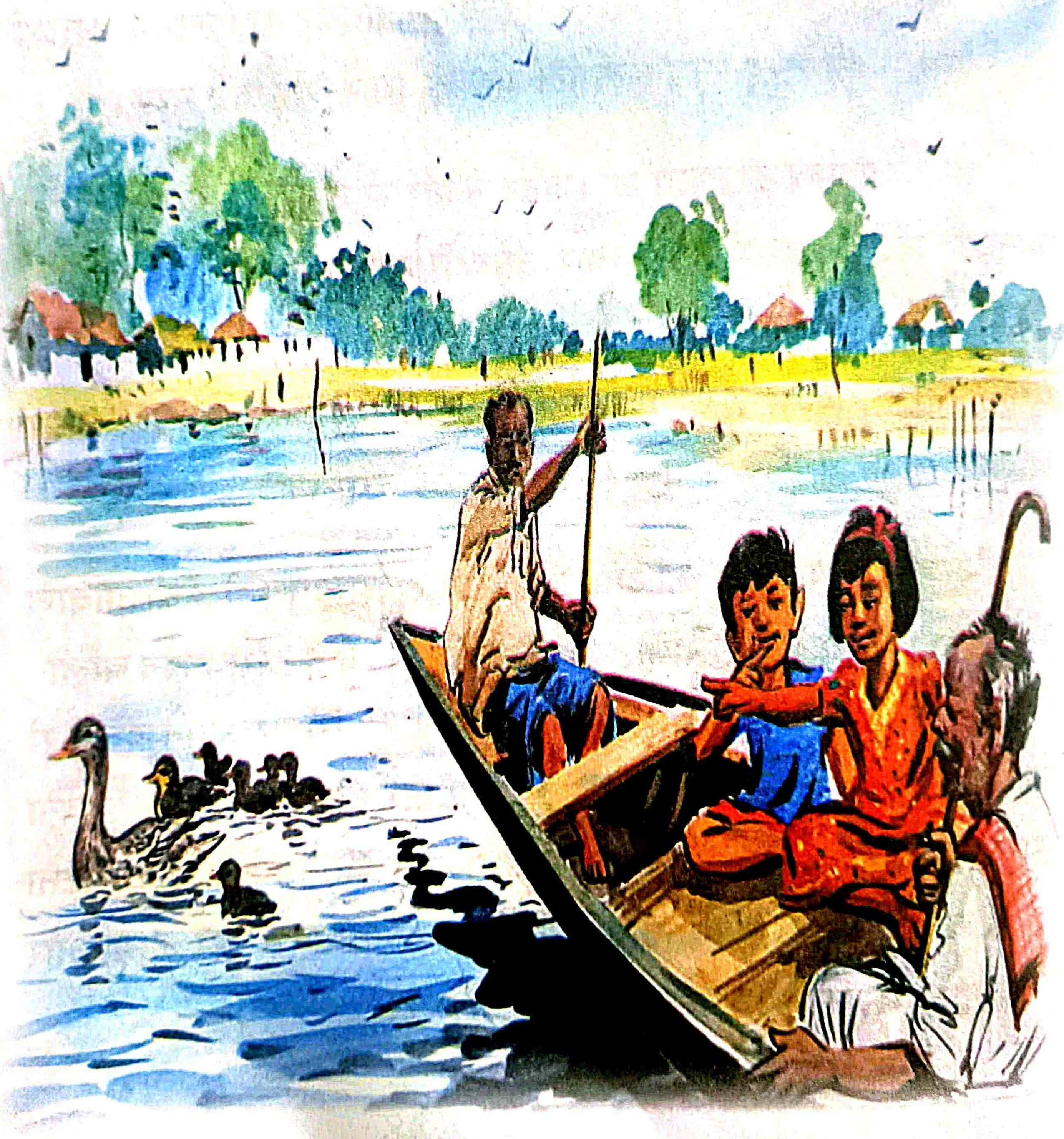

मैं और मेरा भाई बबलू, दादा जी के साथ घूमने निकले। दादा जी ने कहा- "आज एक झील पर चलेंगे।" हम झील पहुँचकर पहले आस-पास घूमे और फिर नाव की सवारी की। हम नाव पर बैठ गए। मैं और बबलू पहली बार नाव पर बैठे थे। जैसे ही हम नाव पर बैठे, नाव हिलने लगी और हम डर गए। दादा जी ने हमारा हाथ पकड़ा। नाव वाले ने चप्पू से नाव को चलाना शुरू किया। जब नाव चली तो थोड़ा डर लग रहा था। पर जैसे-जैसे नाव आगे बढ़ी, मजा आने लगा।

नाव से झील का किनारा छोटा और दूर होता जा रहा था। झील में हमने बहुत सारी बतखें देखीं। बड़ी बतख के पीछे बतख के बच्चे तैर रहे थे। हमें झील के किनारे लगे पेड़ों से चिड़ियों की चहचहाने की आवाजें आ रही थीं। नाव बहुत आगे निकल चुकी थी और अब ऐसा लग रहा था जैसे केवल पेड़ ही पेड़ हैं, आगे कोई रास्ता नहीं। मगर, जैसे ही नाव आगे बढ़ी, रास्ता दिखने लगा। हम नाव वाले से झील के बारे में बातें भी करते रहे। झील से दूर के गाँव दिख रहे थे, जो बहुत ही सुंदर लग रहे थे। कुछ देर बाद हम वापस किनारे पर आ गए। हमने नाव वाले को धन्यवाद दिया। फिर हमने आइसक्रीम खाई और वापस अपने घर आ गए।

पाठ-14

मेरा गाँव

मेरे गाँव का नाम राजपुर है। यह गाँव गोरखपुर जिले में पड़ता है। मेरे गाँव में एक हजार से ज्यादा लोग रहते हैं। यह गाँव बहुत ही हरा-भरा है। गाँव के बगल से एक नदी गुजरती है, जिसका नाम रोहिणी है। यह नदी हमारे गाँव को हरा-भरा बनाए रखने में मदद करती है। हमारे गाँव में एक विद्यालय है, जहाँ आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई होती है। इसी विद्यालय में मैं तीसरी का छात्र हूँ। विद्यालय के सामने बहुत बड़ा खेल का मैदान है। यहाँ लोग खेलने आते हैं।

गाँव में एक छोटा-सा अस्पताल है। अस्पताल में बीमार लोग इलाज करवाते हैं। गाँव की सड़कें पक्की हैं। लोग सड़कों को साफ-सुथरा रखते हैं। सड़क के किनारे पेड़ लगे हैं। गाँव के बीच में एक छोटा बाजार है। जहाँ जरूरत का सारा सामान मिलता है। कई लोग शहर जाकर भी सामान खरीदते हैं। शहर जाने के लिए बसें चलती हैं। गाँव के ज्यादातर लोग खेती करते हैं। कुछ लोग गाँव से बाहर जाकर शहर में भी काम करते हैं। सबसे बड़ी बात है कि गाँव में सभी मिलजुल कर रहते हैं। जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे की मदद भी करते हैं। हमारा गाँव साफ-सुथरा और हरा-भरा है। सभी घरों तक बिजली और पानी पहुँचते हैं। हम सभी त्योहार और उत्सव एक साथ मनाते हैं। ऐसा है मेरा गाँव।

लोभ

समरीक एक लोभी आदमी था। एक सुबह उसने देखा, उसका दोस्त पवन अपने घर को सजा रहा है। समरीक ने उससे पूछा- ''क्या बात है? इतनी सफाई और सजावट चल रही है!'' पवन ने उत्तर दिया- ''किसी को बोलना मत! सिर्फ तुम्हें बता रहा हूँ। आज मेरे यहाँ पर भगवान आने वाले हैं। अरे! आएँगे तो कुछ देकर ही जाएँगे। इसलिए

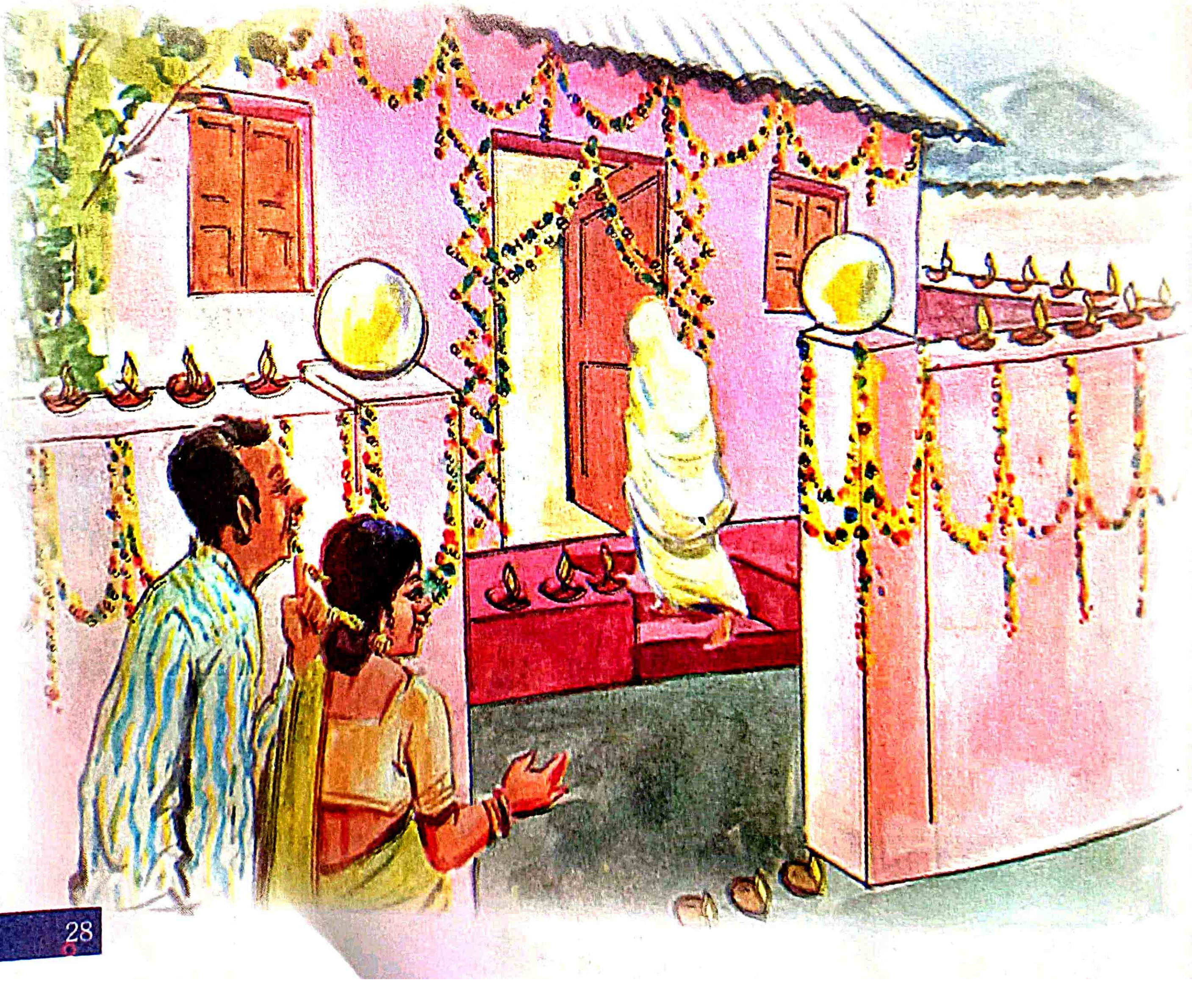

उनके लिए घर सजा रहा हूँ।'' समरीक सुनकर सोच में पड़ गया। उसने पूछा- ''लेकिन आएँगे कहाँ से?'' पवन ने कहा- ''पूरब की ओर से।'' समरीक सोचने लगा- ''पूरब में सबसे पहले मेरा घर है। क्यों न, मैं भी तैयारी कर लूँ। भगवान जरूर पहला घर जाना पसंद करेंगे।''

घर आकर उसने अपने घर को पूरी तरह सजा लिया। उसके बाद जैसे ही शाम हुई, समरीक पत्नी के साथ भगवान का इंतजार करने लगा। आधी रात तक इंतजार करने के बाद भी जब भगवान नहीं आए तो समरीक ने पत्नी से कहा- ''हम लोग घर के अंदर हैं। इसलिए, शायद भगवान नहीं आ रहे हैं। हमें दरवाजा खोल कर बाहर ही रहना चाहिए। भगवान चुपचाप आना चाहते हैं।'' फिर दोनों घर से बाहर आकर इंतजार करने लगे। उसी समय एक चोर घूम रहा था। उसने चादर से पूरे शरीर को ढँक रखा था। जब उसकी नजर समरीक के घर पर पड़ी तो वह चौंक गया। दरवाजा खुला था। यह देख, वह चुपचाप घर के अंदर चला गया। समरीक चोर को ही भगवान समझ बैठा। जैसे ही चोर अंदर गया, वह खुशी से झूम उठा- ''अब भगवान कुछ-न-कुछ देकर ही जाएँगे।'' चोर ने अंदर जाकर सारा कीमती सामान जमा कर लिया। वह सामान लेकर निकल गया। थोड़ी देर बाद समरीक पत्नी के साथ अंदर गया। उसने देखा कि सभी कीमती सामान गायब है। उसने माथा ठोक लिया। वह समझ गया कि वह लुट चुका है।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

पाठ-16

बोलती चुटकी

एक थी चुटकी। वह बहुत बोलती थी। हर किसी से बात करती थी। दीवारों से, कुत्तों से, बिल्लियों से, गिलहरियों से, बर्तनों से, किताबों से, पेंसिलों से। हमेशा कुछ-न-कुछ पूछती रहती थी। घर में लोग उससे परेशान हो जाते थे। वह कभी चुप नहीं रहती। चुटकी की बातें कभी खत्म नहीं होती, कभी-कभी पूरे समय ही बातें करती। कई बार

उसे डाँट भी लगती थी, पर उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। बस दादाजी उसे कभी नहीं डाँटते थे।

एक बार दादाजी टीवी देख रहे थे, वहीं पर चुटकी टीवी से बातें करने लगी। अब चुटकी की लगातार बातें चलने लगीं तो दादाजी ने डाँट दिया। चुटकी नाराज हो गई और जोर से बोली– "मेरी आवाज कोई और ले लो, अब मैं कुछ नहीं बोलूँगी।" अगले ही पल से चुटकी की आवाज गायब हो गई। जैसे ही चुटकी कुछ बोलने लगी, तो पाया कि वह बोल ही नहीं पा रही है। उसने बहुत कोशिश की, मगर उसके मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। घर के लोग डर गए कि चुटकी की आवाज को क्या हुआ?

सबने उससे बहुत बुलवाने की कोशिश की, मगर उसकी आवाज नहीं आई। उसको डाक्टर के पास लेकर गए। डाक्टर ने उसे कुछ दवाइयाँ दीं। फिर भी वह ठीक नहीं हुई। वह सारा दिन चुप रहती। तीन दिन बाद, घर के आँगन में एक चिड़िया आई और जोर-जोर से चहचहाने लगी। चुटकी उसकी आवाज सुन रही थी। उसे लगा, जैसे चिड़िया उसी से बात कर रही है। अचानक उसके मुँह से निकल गया– "मेरी आवाज गायब है।" उसकी आवाज सुनकर घर के सभी लोग दौड़े। चिड़िया ने कहा– "उस दिन मैं तेरी आवाज लेकर चली गई थी। कैसी लगी?" यह सुनकर सभी हँसने लगे। चुटकी अब चिड़िया से बात करने में लग गई। सब समझ चुके थे कि अब चुटकी रुकने वाली कहाँ है!

पाठ-17

लायक कौन ?

एक दिन कुत्ते और लोमड़ी में बहस चल रही थी। दोनों एक बात पर लड़ रहे थे कि अधिक लायक कौन है।

कुत्ता : यह बहस की बात नहीं है। सारी दुनिया जानती है, मैं कितना लायक हूँ।

लोमड़ी : पर मैं नहीं मानती। मैं तुमसे कहीं ज्यादा समझदार और लायक हूँ।

कुत्ता : लोग मुझे अपने घर पर रखते हैं। मेरी इंसानों की तरह इज्जत होती है। मुझे अपने लायक समझते हैं।

लोमड़ी : मगर दिमाग के मामले में लोग मेरा नाम लेते हैं। मैं समझदारी से काम लेती हूँ। दूसरों के पीछे-पीछे नहीं घूमती। जंगल में मेरी बहुत पूछ है।

(उसी समय वहाँ से एक भालू गुजर रहा था।)

लोमड़ी : भालू भाई, हमारी बात सुनो।

भालू : क्या हुआ? बताओ।

लोमड़ी : तुम बताओ, मैं ज्यादा लायक हूँ या कुत्ता?

(भालू कुछ देर शांत रहा। सोचता रहा।)

भालू : मैं अभी भूखा हूँ। मैं इस पेड़ का आम खाना चाहता हूँ। जो मुझे यह आम लाकर देगा, वही ज्यादा लायक कहलाएगा।

(कुत्ता और लोमड़ी दोनों सोच में पड़ गए।)

भालू : क्या हुआ? तुम दोनों चुप क्यों हो गए?

(कुत्ता और लोमड़ी एक-दूसरे को देखते रहे।)

भालू : देखो, मेरे लिए कौन लायक है!

(भालू ने आवाज लगाकर खरगोश को बुलाया।)

भालू : क्या तुम मुझे एक आम खिला सकते हो?

खरगोश : बिलकुल। मैं तीनों को आम खिलाऊँगा।

(खरगोश ने तीन आम तोड़े और तीनों को आम लाकर दिए।)

भालू : देखा, कौन लायक है। सभी अपनी-अपनी जगह लायक हैं और समझदार हैं। इसलिए लड़ो मत।

पाठ-18

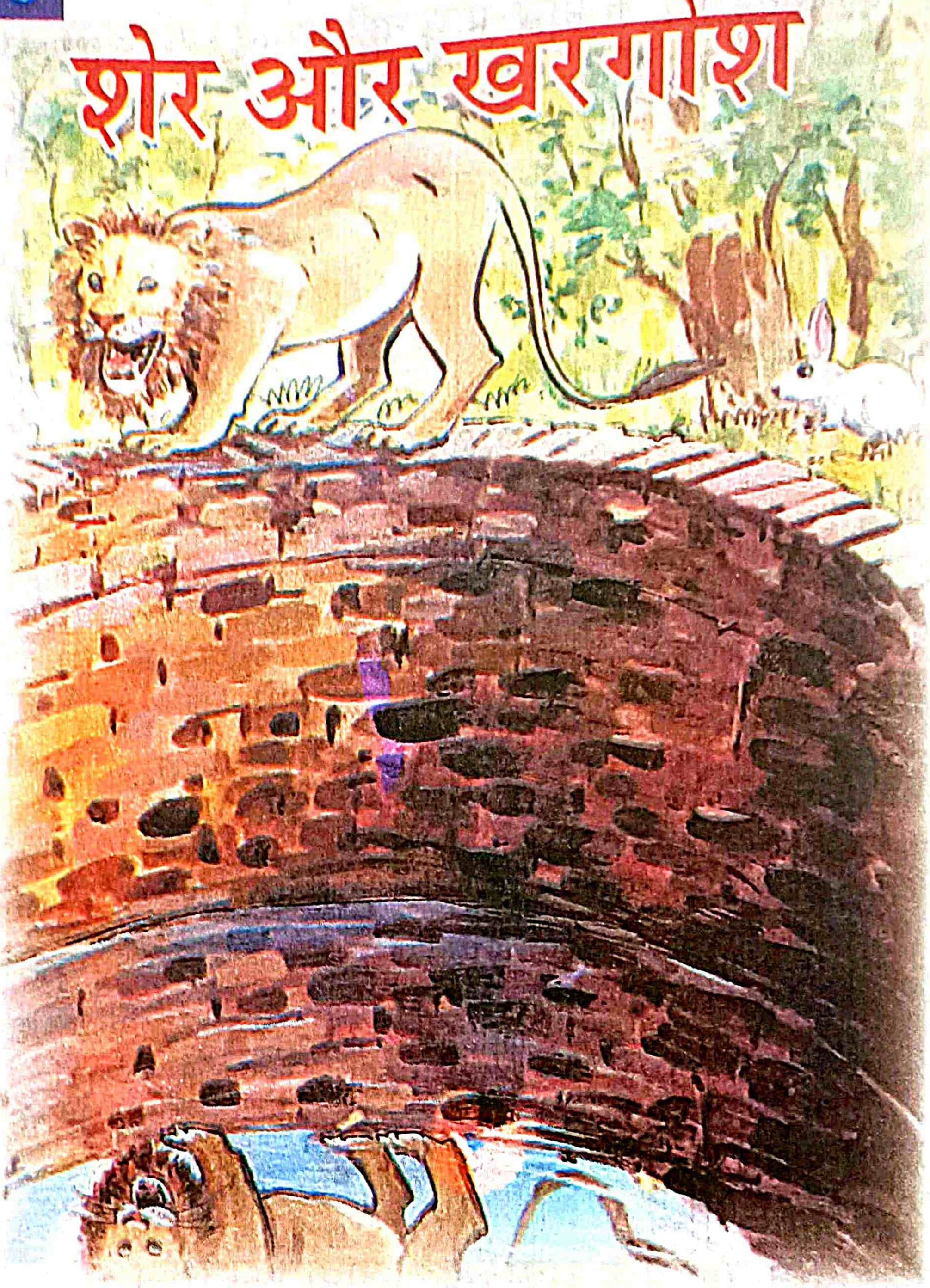

जंगल में एक शेर रहता था। वह हर दिन शिकार करता और जंगल के जानवरों को खा जाता। जंगल के सभी जानवर बहुत डरे हुए और परेशान रहते। एक दिन सभी जानवरों ने मिलकर एक फैसला लिया कि हर दिन एक जानवर शेर के पास खाने के लिए भेजा

जाएगा। अब सभी जानवर बारी-बारी से एक जानवर का चुनाव करते और उसे शेर की भूख मिटाने के लिए शेर की गुफा मे भेज देते।

एक दिन जंगल में एक छोटे खरगोश को चुना गया। खरगोश बहुत चालाक था। उसने एक उपाय सोचा। वह शेर के पास बहुत देर बाद पहुँचा। शेर गुस्से में था। शेर ने दहाड़कर पूछा- ''इतनी देर से क्यों आए हो ? और तुम इतने छोटे हो कि मेरी भूख भी नहीं मिटेगी।'' खरगोश बोला- ''महाराज जब मैं आपके पास आ रहा था तो मुझे दूसरे शेर ने पकड़ लिया था। मैं बहुत मुश्किल से बचकर आपके पास आया हूँ। मैंने दूसरे शेर से कहा कि मैं अपने राजा के पास जा रहा हूँ, मगर उसने मेरी बात नहीं मानी और कहने लगा इस जंगल का राजा सिर्फ मैं हूँ और कोई नहीं। मैं बड़ी मुश्किल से बच कर आपके पास पहुँचा हूँ, महराज!'' यह सुनकर शेर बोला- ''इस जंगल का राजा सिर्फ मैं हूँ और कोई नहीं। चलो मुझे उस दूसरे शेर के पास ले चलो।'' खरगोश शेर को एक बड़े कुएँ के पास ले गया और बोला- ''वह दूसरा शेर इसी में रहता है।'' शेर ने कुएँ में झाँका। उसे अपनी परछाई नजर आई। उसे लगा, कोई दूसरा शेर है। उसने दहाड़ना शुरू किया तो उसे अपनी आवाज वापस सुनाई दी, शेर को लगा, दूसरा शेर भी दहाड़ रहा है। उसने कुएँ मे छलांग लगा दी। शेर मर गया। खरगोश ने चालाकी से अपनी और सभी जंगल के जानवरों की जान बचा ली। जंगल के सभी जानवर खरगोश की समझदारी पर बहुत खुश हुए।

बताओ, मैं कौन?

राजा रानी सुनो कहानी,
एक घड़े मे दो रंग पानी।

हरी थी मन भरी थी,
लाल मोती जड़ी थी।
राजा जी के बाग में,
दुशाला ओड़े खड़ी थी।

ना मुझे इंजन की जरूरत,
ना मुझे पेट्रोल की जरूरत।
जल्दी–जल्दी पैर चलाओ,
मंजिल अपनी पहुँच जाओ।

वह कौन सी चीज है,
जिसे खाने के लिए खरीदते हैं?
लेकिन उसे खाते नहीं,
लगाओ दिमाग! फेल हो गए क्या?

छोटा–सा राजकुमार
कपड़े पहने एक हजार।

खाना कभी नहीं खाता वह,
और न पीता पानी।
उसकी बुद्धि के आगे तो,
हार माने हर ज्ञानी।

हरे रंग की टोपी मेरी,
हरे रंग का है दुशाला।
जब पक जाती हूँ मैं तो,
हरे रंग की टोपी,
लाल रंग का होता दुशाला।
मेरे पेट में रहती मोती की माला,
नाम जरा मेरा बताओ लाला!

तीन अक्षर का नाम है,
पानी जैसा रूप।
हवा तो इसकी मौत है,
जीवन गरमी व धूप।

हरा आटा,
लाल परांठा।

एक माँ के दो बच्चे,
दोनों के एक ही रंग।
एक घूमे, एक बैठे,
फिर भी दोनों संग।

उत्तर – साइकिल, प्याज, अण्डा, पसीना, हरी मिर्च, कम्प्युटर, चक्की, मक्का, प्लेट, मेहंदी

नीचे दिए गए शब्दों की मदद से एक कहानी बनाओ।
अपने शिक्षक और साथियों को यह कहानी सुनाओ।

खरगोश	बन्दर	हाथी
जंगल	सैर	फल
पेड़	मजा	घूमना

इस कहानी को नोटबुक में लिखकर अपने शिक्षक को दिखाओ।

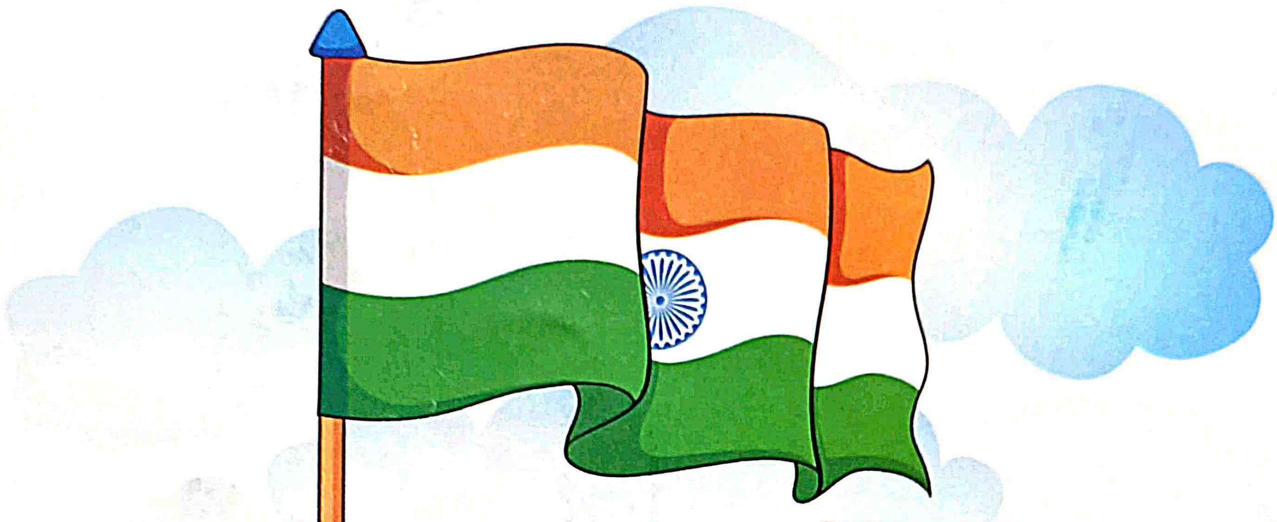

राष्ट्रगान

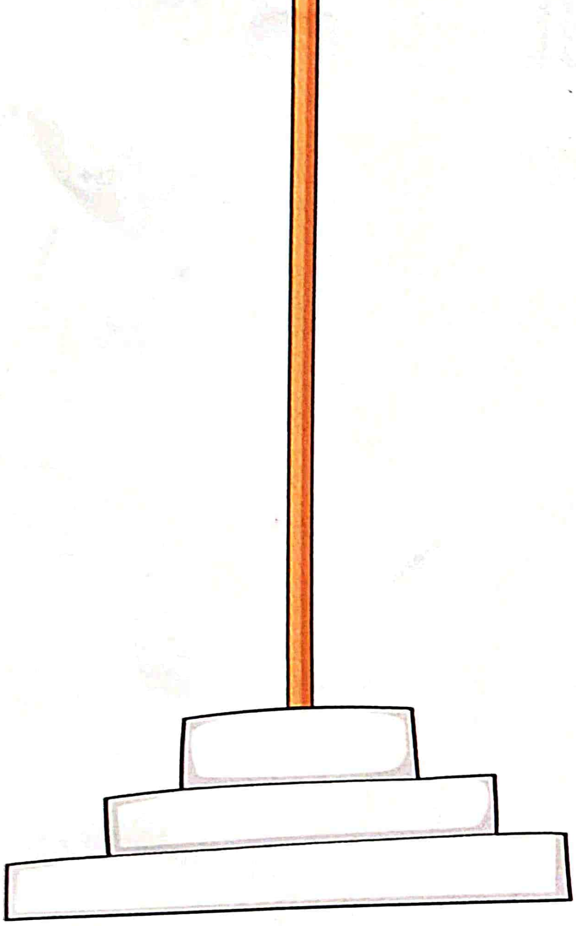

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

सत्र 2020-2021

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद

निःशुल्क वितरण हेतु

आवरण पृष्ठ : अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा द्वारा मुद्रित